मूल्य/धर्मार्थ : 1 पैसा
(केवल बहाईयों में वितरण हेतु)

बहाई समाचारपत्र

Licenced to post without Pre-Payment Posted at DPSO
Delhi on 10/11.08. 2022

Sender's Address:
6, Shrimant Madhavrao Scindia Marg. New Delhi - 110 001 - INDIA

वर्ष : 58 अंक 08 प्रकाशन : प्रत्येक माह की 8 तारीख

अगस्त 2022 बहाई वर्ष : 179

विश्व न्याय मन्दिर

निष्ठावानों के समुदाय द्वारा निभाए जाने वाले अनिवार्य दायित्व विश्व में व्याप्त भ्रांति, अविश्वास और अनिश्चितता के वातावरण में अब और अत्यावश्यक हो गए हैं। वास्तव में, मित्रों को चाहिए कि वे एक ऐसा प्रदीप जलाने के लिए हर अवसर का प्रयोग करें जो मार्ग को प्रकाशित कर सके और जिससे चिन्तातुर लोगों को आश्वासन, निराशजनों को आशा प्राप्त हो सके।

–रिज़वान 2017

विश्व न्याय मन्दिर के दो सदस्यों का भारत आगमन

विश्व न्याय मन्दिर के दो सदस्यों डॉ. पेमान मोहाजर और श्री प्रवीण मलिक द्वारा भारत में की गई यात्राओं का सौभाग्य भारतीय बहाई समुदाय को प्राप्त



लखनऊ में आयोजित सभा के प्रतिभागी

हुआ। डॉ. मोहाजर ने 1, 2, 3 और 4 जुलाई, 2022 को लखनऊ के सिटी मोंटेसरी स्कूल में आयोजित एक सभा में भाग लिया और श्री मलिक 5, 6 और 7 जुलाई को चेन्नई की सभा में शामिल हुए। अंतर्राष्ट्रीय शिक्षण केन्द्र की सदस्य श्रीमती ग्लोरिया जावेद भी दोनों समारोहों में उपस्थित रहीं।

उत्तर प्रदेश के उन्नत गांवों के कई मित्रों तथा महाराष्ट्र, पश्चिम बंगाल और तमिलनाडु जैसे अन्य राज्यों के कुछ मित्रों ने भी भाग लिया। इस सभा का उद्देश्य यह देखना था कि इन गांवों में सामाजिक कार्य के प्रयास कितने आगे बढ़े हैं। कई अंतर्दृष्टि और अनुभव साझा किए गए और मित्रों ने स्थानीय आध्यात्मिक सभाओं और गांव या पड़ोस स्तर के समूहों की प्रगति से संबंधित विकास पर चर्चा की जो



चेन्नई में आयोजित सभा में भाग लेने वाले मित्रगण

तेजी से शैक्षिक गतिविधियों और भक्तिपरक बैठकों का स्वामित्व ले रहे हैं। सभा ने, क्षेत्रीय बहाई परिषद, प्रशिक्षण संस्थान मण्डल और सहायक मण्डल सदस्यों तथा उनके सहायकों और एक–दूसरे के साथ उनके संबंधों की प्रकृति जैसे क्षेत्र में संस्थानों और एजेंसियों के बीच अधिक चर्चा और परामर्श की आवश्यकता पर भी ध्यान केन्द्रित किया।

शेष पृष्ठ 4 पर

इस अंक में

गुजरात में कोष सम्मेलन का आयोजन

गुजरात में बहाई कोष सम्मेलन और कोष यात्रा मई 2009 से एक नियमित विशेषता बन गई है और यह बहाई कोष के साथ अनुयायियों के संबंधों को सुदृढ़ करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है।

इस क्रम में गुजरात की राज्य बहाई परिषद द्वारा 3 से 5 जून, 2022 तक वन शिविर स्थल, किलाड, गुजरात में आयोजित 13वें बहाई कोष सम्मेलन का समापन आध्यात्मिक संवर्धन और प्रभुधर्म तथा मानवता की सेवा के प्रति समर्पण के माहौल में नियमित रूप से, निरंतर और त्याग के रूप में बहाई कोष का समर्थन करने की इच्छा से किया गया। कार्यक्रम में राज्य भर के 22 क्लस्टरों के लगभग दो सौ मित्रों ने भाग लिया। इन तीन दिनों के दौरान मित्रों को बहाई कोष की विभिन्न आध्यात्मिक अवधारणाओं और सिद्धांतों पर विचार करने का अवसर प्राप्त हुआ। विभिन्न विषयों पर कुछ प्रस्तुतियों के साथ, प्रतिभागियों को रूही पुस्तक–11 की दूसरी इकाई 'कोष की संस्थान' का एक साथ अध्ययन करने का अवसर प्रदान किया गया, जिसने उन्हें बहाई कोष से जुड़ी कुछ अवधारणाओं और सिद्धांतों को व्यवस्थित रूप से खोजने में सहायता की।



गुजरात के मित्रगण कोष के बारे में जानकारी लेते हुए

कोष सम्मेलन की शुरुआत आध्यात्मिक उत्थान वाली भक्तिपरक सभा के साथ हुई और उसके बाद फिल्म 'सौ वर्षों की झलक' का प्रदर्शन किया गया। इस सत्र ने मित्रों को पिछले एक सौ वर्षों के दौरान हुई प्रगति की ऐतिहासिक पृष्ठभूमि से परिचित होने और उनके सामने प्रभुधर्म की अपेक्षित वृद्धि और भौतिक आवश्यकताओं की कल्पना करने में सहायता की। दोपहर का सत्र रूही पुस्तक–11 की इकाई–1 ''देना–समृद्धि हेतु आध्यात्मिक आधार'' के अवलोकन के साथ परिषद अध्यक्षा द्वारा शुरू किया गया। इस सत्र ने मित्रों को धन से जुड़े तीन बुनियादी सिद्धांतों के बारे में समझने में सहायता की– पहला, यह सत्कार्य का फल होना चाहिए। दूसरा, इसका उपयोग आगे के योग्य कारणों के लिए किया जाना है और तीसरा, यह स्वीकार्य नहीं है कि कुछ लोग अत्यधिक धन जमा करते हैं जबकि बाकी निर्धन हैं। उन्होंने पुस्तक में वर्णित उदार हृदय के कुछ गुणों के बारे में भी चर्चा की।

रूही पुस्तक–11 'कोष की संस्था' की इकाई–2 के अध्ययन ने मित्रों को कोष से संबंधित विषयों पर चर्चा करने में सहायता की। मित्रों ने स्वीकार किया कि इस 13वें सम्मेलन के दौरान उन्हें कोष की विभिन्न अवधारणाओं के बारे में अपनी समझ को व्यवस्थित रूप से बढ़ाने का अवसर प्राप्त हुआ क्योंकि वे कोष की संस्था पर पुस्तक का अध्ययन करने में सक्षम थे। इस पाठ्यक्रम के अध्ययन के लिए कुछ सात सत्र समर्पित किए गए थे।

दूसरे दिन की शुरुआत परिषद सचिव द्वारा 'आध्यात्मिक जीवन की आवश्यकताएँ' पर एक प्रस्तुति द्वारा की गई, जिसने मित्रों को

शेष पृष्ठ 3 पर

गुरुग्राम में आयोजित गतिविधियों की झलक

• गुरुग्राम में किशोरों के लिए एक सम्मेलन का आयोजन किया गया, जिसमें लगभग 55 किशोरों ने भाग लिया। सम्मेलन के दौरान किशोरों के पाँच दल बनाए गए जिनमें अध्ययन सामग्री में दिए गए प्रश्नों पर गहन चर्चा की गई। हमारे जीवन का उद्देश्य क्या है किशोरों में इस समझ को विकसित करने का प्रयास किया गया। साथ ही, किशोरों ने प्रयोगात्मक रूप से यह भी जाना कि किसी भी कार्य को व्यवस्थित और उचित ढंग से करने के लिए आपस में एकता और सहयोग की भावना का होना अत्यंत आवश्यक है। किशोरों ने एकता पर गीत सीखे और एक दल ने कविता लिखने का प्रयास किया। अध्ययन सामग्री को पढ़ने के दौरान किशोरों ने अपने क्षेत्र में किए जाने वाले बदलावों के विषय में भी विचार किया। सभी ने भौतिक और आध्यात्मिक दोनों पहलुओं के विषयों पर परामर्श किया। किशोर दलों ने स्त्री–पुरुष समानता, दुनिया तब बहुत सुंदर होगी जब सभी मानव एक होंगे आदि को चित्रकारिता के माध्यम से दर्शाया।



किशोर सम्मेलन में चित्रों के माध्यम से बदलवों को दर्शाते हुए

• गुरुग्राम के बहाई भवन में एक शिक्षक बैठक का आयोजन किया गया, जिसमें 18 मित्रगणों ने अपनी प्रतिभागिता दर्ज की। कार्यक्रम में सभी ने अपना–अपना परिचय देते हुए कुछ महत्वपूर्ण बिंदुओं पर विचार–विमर्श किया और बैठक को अर्थपूर्ण बनाने के प्रयास किए गए। अध्ययन सामग्री को पढ़ते समय उस पर परामर्श किया गया और अपने अनुभवों को एक–दूसरे के साथ साझा किया। अध्ययन सामग्री पावनता और त्याग पर आधारित थी, सभी प्रतिभागियों ने अपने जीवन में परिवर्तन लाने के बारे में सोचा। अपने अंदर छिपी हुई बुराई को अच्छाई में बदलने के प्रयासों पर चर्चा की गई। शिक्षकों ने कक्षा के दौरान आने वाली चुनौतियों और समस्याओं के बारे में बताया, जिनका समाधान निकाले का प्रयत्न किया गया। बैठक में कुछ ऐसे शिक्षक भी थे जिन्होंने अभी अपनी पहली ही कक्षा ली है, उन्होंने अपने अनुभव साझा किए। अनुभवों को सुनने के बाद लगा कि शिक्षक अपनी क्षमता को उजागर कर पा रहे हैं। सभी ने मिलकर आगामी तीन महीनों के लिए योजना बनाई। इस बैठक के दौरान सभी शिक्षक बहुत ही उत्साहित नजर आ रहे थे। सभी ने अपने–अपने अनुभव एक–दूसरे से साझा किए और अपनी चुनौतयों तथा सीखों पर परामर्श किया।



शिक्षक बैठक में भाग लेने वाले प्रतिभागी

जयपुर में बाब के बलिदान दिवस पर रक्तदान

राजस्थान में जयपुर के बहाई समुदाय द्वारा रविवार 10 जुलाई, 2022 को बाब का शहीदी दिवस प्रार्थना और भक्ति के माहौल में मनाया गया। इस अवसर पर एक "रक्तदान अभियान" का भी आयोजन किया गया, जिसमें 24 यूनिट रक्त एकत्रित किया गया।



जयपुर में आयोजित शिविर में रक्तदान करते हुए

अनेक बहाइयों ने रक्तदान करके बाब के प्रति अपनी श्रद्धा प्रकट की और उन लोगों के प्रति अपना दायित्व निभाया जिन्हें संकट के समय रक्त की परम आवश्यकता होती है।

स्थानीय आध्यात्मिक सभा के सचिव ने उपस्थित मित्रों को विस्तारपूर्वक बाब के जन्म से लेकर उनके शहीद होने तक के बारे में बताया। उन्होंने बताया कि बाब ने जिस युगान्तरकारी धर्म की घोषणा की थी वह आज बहाई धर्म के रूप में पृथ्वी के सभी देशों में फैल चुका है। बाब वे पहले अवतार हैं जिन्होंने "स्त्री–पुरुष की समानता" का घोष किया था और उनके आरंभिक 19 अनुयायियों में एक प्रसिद्ध कवयित्री 'ताहिरा' भी थी, जिन्होंने इस समानता के सिद्धान्त को आगे बढ़ाया।

जमशेदपुर में रूही पुस्तक–13 का अध्ययन

झारखण्ड में जमशेदपुर स्थित बहाई केंद्र में जमशेदपुर तथा मानगो क्लस्टर के लगभग 30 मित्रों के साथ सामाजिक क्रिया से संबंधित रूही पुस्तक–13 की प्रथम इकाई (सामाजिक क्रिया में संलग्नता) का 5 से 7 जुलाई 2022 तक अध्ययन किया गया। यह पुस्तक अपने आप में एक विशेष महत्व रखती है, जो की हमें सामाजिक क्रिया की समझ, प्रारंभिक उद्दीपन, पहचानने का दृष्टिकोण, वार्तालाप तथा सामाजिक क्रिया हेतु आवश्यक क्षमताओं तथा गुणों को विकसित करती है। उपस्थित मित्रों ने पुस्तक की सहायता से यह जाना की हम प्रत्येक समय समुदायों में औपचारिक तथा अनौपचारिक तरीके से सामाजिक क्रिया करते हैं। हमारा प्रयास छोटा होता है लेकिन उसके प्रभाव का तत्काल प्रतिफल हमें नहीं दिखता लेकिन कुछ समय बाद इसके कुछ प्रारम्भिक स्पंदन को हम महसूस कर सकते हैं। प्रतिभागियों ने पुस्तक में उल्लेखित बहाउल्लाह, अब्दुल बहा, शोगी एफेन्दी तथा विश्व न्याय मंदिर के संदेशों से चयनित लेखों से सामाजिक क्रिया की अवधारणा को और स्पष्ट तरीके से समझने में सहायता प्राप्त हुई। अभ्यास कार्यों से अन्तर्दृष्टियाँ और स्पष्ट हुईं। हम प्रतिदिन कुछ कार्य ऐसे करते हैं जो सामाजिक क्रिया के अंतर्गत आते हैं। पुस्तक की सहायता से जाना की अपने जीवन को सामंजस्य पूर्ण कैसे बनाया जाए। यह देखा गया है कि जिस समुदाय में बहाई गति–विधियों ने अपनी जड़ें जमाई हैं तथा एक महत्वपूर्ण प्रतिशत समुदाय का बहाउल्लाह की प्रकटीकरण से जुड़ा है और स्थानीय संस्थाओं तथा एजेंसियो की क्षमताओ का विकास हुआ है वहाँ पर सामाजिक क्रिया का उद्दीपन एक स्वभाविक प्रक्रिया है और यह उस समुदाय के लिए नित्यान्त आवश्यक भी है। यह पुस्तक हमें अपने व्यक्तिगत, पारिवारिक, सामुदायिक जीवन को सामंजस्य पूर्ण तरीके से जीने तथा ईश्वरीय लेखों के अनुसार व्यतीत करके हेतु प्रोत्साहित करती है। सामाजिक क्रिया के केंद्र में है सक्रिय मानव संसाधनों का सतत विकसित होता हुआ नाभिक। इस क्रिया की जितनी स्पष्ट समझ होगी हम समुदाय में बेहतरी के रचनात्मक तरीके खोज सकते हैं। शुरुआत में सामाजिक क्रिया का स्वरूप भले ही छोटा हो लेकिन समय के साथ–साथ इस दिशा में अथक प्रयासों से यह व्यापक स्वरूप धारण करता है जिसके प्रभाव से वह समुदाय ही नहीं अपितु आस–पड़ोस के जन समुदाय भी लाभान्वित होते हैं।



रूही पुस्तक–13 का अध्ययन करने वाले मित्रगण

गुजरात में कोष सम्मेलन का आयोजन

पृष्ठ 1 का शेष

बहाई जीवन के अविभाज्य तत्वों– आराधना और सेवा, होना और करना, और कुछ आध्यात्मिक आवश्यकताओं पर विचार करने में सहायता की– जैसे अनिवार्य प्रार्थना, हर सुबह और शाम पवित्र ग्रंथों को पढ़ना, अल्लाह–ओ–आभा को 19 बार दोहराना, उपवास, शिक्षण, कोष आदि। हम कह सकते हैं कि कोष सम्मेलन का मूल अनुयायियों द्वारा प्रभुधर्म के विभिन्न कोषों के लिए दी गई प्रतिज्ञाओं का प्रवाह है। यह सत्र निरपवाद रूप से निस्वार्थ प्रेम को दर्शाता है जो मित्रों के हृदय में प्रभुधर्म के प्रति है और वे अपने भौतिक साधनों से एक भाग देने की इच्छा रखते हैं। अब गुजरात में यह एक संस्कृति बन गई है कि मित्र कोष सम्मेलन हेतु अपनी प्रतिज्ञा/कोष प्रदान करने आते हैं। 'बहाई कोष' पर प्रस्तुति ने मित्रों को प्रभुधर्म की के लिए राष्ट्रीय आध्यात्मिक सभा पर आश्रित नहीं होना पड़ेगा। कुछ मित्र जो कोष सम्मेलन में भाग लेने में सक्षम नहीं थे, उन्होंने भी टेलीफोन कॉल या व्हाट्सएप संदेशों के माध्यम से कोषाध्यक्ष को अपनी प्रतिज्ञा भेजी।

रात्रिभोज के उपरांत एक अनौपचारिक वार्तालाप सत्र के दौरान युवाओं के साथ विवाह और पारिवारिक जीवन और एक सुसंगत जीवन जैसे विभिन्न विषयों पर चर्चा की गई। इसके बाद मित्रों ने गरबा नृत्य का भी आनंद लिया।

तीसरे दिन रूही पुस्तक–11 के अध्ययन के बाद, परिषद के एक सदस्य ने हुकूकुल्लाह के विधान के बारे में बात की और मित्रों को विधान का पालन करने हेतु प्रोत्साहित किया। उन्होंने कहा कि हुकूकुल्लाह का पालन करने से व्यक्ति अपने धन को शुद्ध कर



कोष सम्मेलन में भाग लेने वाले मित्रगण

बढ़ती वित्तीय आवश्यकताओं को बेहतर ढंग से समझने में सहायता की। प्रस्तुति ने मित्रों को 9 वर्ष की योजना के लक्ष्यों को समझने में सहायता की, उन्होंने जाना कि कैसे वित्तीय आवश्यकताएँ दिन–ब–दिन बढ़ती जा रही हैं। इस सत्र के बाद परिषद के कोषाध्यक्ष द्वारा प्रतिज्ञाओं/कोषों हेतु निमंत्रण दिया गया। कोषाध्यक्ष ने वर्ष 2021–22 के लिए परिषद और प्रशिक्षण संस्थान मंडल की वित्तीय रिपोर्ट और वर्ष 2022–23 के लिए योजना और बजट प्रस्तुत किया और मित्रों को अपनी प्रतिज्ञा प्रदान करने हेतु आमंत्रित किया। दोपहर में कोषाध्यक्ष ने घोषणा की कि विभिन्न कोषों के लिए प्राप्त कुल प्रतिज्ञाएं 43 लाख रुपये से अधिक थीं। मित्रों को अपना योगदान समय पर देने के लिए प्रोत्साहित किया गया क्योंकि यह परिषद को गुजरात बहाई समुदाय की वित्तीय आवश्यकताओं को समय पर पूरा करने में सहायता करेगा और धन सकता है। जब सभी आवश्यक खर्चों में कटौती के बाद किसी व्यक्ति की बचत 19 मिश्कल (लगभग 69.16 ग्राम) सोने के मूल्य के बराबर हो जाती है, तो विधान उस पर लागू हो जाता है और वह व्यक्ति 19 प्रतिशत हुकूकुल्लाह देने का पात्र है। उन्होंने यह भी समझाया कि जिन मित्रों की बचत 19 मिश्कल के बराबर नहीं है, वे भी बहाउल्लाह के प्रति अपने प्रेम के प्रतीक के रूप में हुकूक का भुगतान कर सकते हैं। इस सम्मेलन ने मित्रों को बेहतर ढंग से यह समझने में सहायता की कि हमें कोष में दान इसलिए नहीं देना चाहिए कि प्रभुधर्म को आवश्यकता है, बल्कि हमें इसलिए देना चाहिए क्योंकि ''देना और उदार होना हमारी आत्मा का गुण है''। तीन दिवसीय सम्मेलन का समापन धन्यवाद प्रस्ताव के साथ हुआ और उसके बाद समापन प्रार्थना की गई। कार्यक्रम को सफल बनाने के लिए परिषद ने सभी मित्रों का आभार व्यक्त किया।

समाचारचित्र



कर्नाटक में मांड्या की सहायक मण्डल सदस्य श्रीमती शीला अशोक जो एक नर्सिंग अधिकारी हैं उन्हें भारतीय राष्ट्रीय प्रेस परिषद और कर्नाटक के समाचार पत्र संघ ने संयुक्त रूप से ''नेशनल फ्लोरेंस नाइटिंगेल नर्स पुरस्कार–2022'' और स्वर्णपदक से सम्मानित किया। यह पुरस्कार नर्सिंग क्षेत्र में उत्कृष्ट कार्य करने के लिए प्रदान किया जाता है।



स्थानीय आध्यात्मिक सभा देवलाली द्वारा 26 जून, 2022 को बहाई भवन में माध्यमिक विद्यालय–एसएससी उत्तीर्ण करने वाले विद्यार्थियों को ट्रॉफी देकर सम्मानित किया गया। इस कार्यक्रम में नाशिक महानगर पालिका के शिक्षा अधिकारी, कैंटोनमेंट बोर्ड हाई स्कूल के प्रधानाचार्य तथा देवलाली कैंटोनमेंट बोर्ड के उपाध्यक्ष उपस्थित हुए। कार्यक्रम में 30 विद्यार्थी उपस्थित थे। विद्यार्थियों ने अपने अनुभव साझा किए और उपस्थित मान्यवरों ने विद्यार्थियों को प्रोत्साहित किया। कार्यक्रम के दौरान विश्वव्यापी सम्मेलन का दस्तावेज पढ़ा गया।

बहाई विश्व केन्द्र में सेवा के अवसर

जैसे–जैसे दुनिया के हर भाग में प्रभुधर्म के कार्य फैलते जा रहे हैं वैसे–वैसे बहाई विश्व केन्द्र की प्रभावशाली कार्यविधि का महत्व बढ़ता जा रहा है। प्रभुधर्म के विश्व केन्द्र का वर्णन शोगी एफेंदी द्वारा कुछ इन शब्दों में किया गया है : विश्व केन्द्र "नई विश्व व्यवस्था की एजेंसियों की धुरी है," यह विविध देशों से आये अनुयायियों के निरन्तर प्रवाह से सम्बलित है, जो निःस्वार्थ भाव से सेवा की एक निश्चित अवधि के लिये आते हैं, जो अवधि भिन्न–भिन्न हुआ करती है। विश्व केन्द्र में स्टॉफ की ज़रूरत विभिन्न कामों के लिये होती है, जो उपलब्ध संसाधनों और बढ़ती हुई ज़रूरतों के आधार पर निर्भर करते हैं। किसी ख़ास समय में सुयोग्य और प्रशिक्षित व्यक्तियों की ज़रूरत होती है। तो किसी अन्य समय में सामान्य काम–काज के लिये ज़रूरत होती है। विश्व केन्द्र में सेवा की प्रकृति के कारण 12 महीने या अधिक समय के लिये यह ज़रूरत पड़ती है। इच्छुक व्यक्ति को अंग्रेजी का ज्ञान होना चाहिये।

सेवा देने के इच्छुक किसी भी मित्र को इस बात के लिये प्रोत्साहित किया जाता है कि कार्मिक विभाग से serve@bwc.org पर सम्पर्क करे।

आप सीधे अपना आवेदन https://service.bwc.org/ पर भी भेज सकते हैं।

Regd. No. DELHIN / 1966 / 04204
Delhi P.S.O.
Delhi Postal Regd No. DL (ND) 11/6036/2021-22-23
Licensed to post without pre-payment No. U (C)-52/2021-22-23

अब्दुल बहा के स्वर्गारोहण की शताब्दी के अवसर पर कहानी जो अब्दुल बहा ने कही

सत्यवादी जासूस

"मानवता के संसार के सभी सद्गुणों की नींव सत्यवादिता है।"

—अब्दुल—बहा

ऐसा कहा जाता है कि हारून रशीद के बेटों – अमीन और मामून के समय एक सत्यवादी व्यक्ति रहता था जिसने प्रशंसनीय रूप से उच्च पद तक उन्नत्ति पाई। एक समय मामून ने अपनी विशाल सेना के साथ बग़दाद की ओर बढ़ना शुरू किया। अमीन ने अली नाम के एक जासूस को मामून की सेना की तरफ भेजा।

जब दोनों सेनाएँ एक—दूसरे के आमने—सामने आईं तो मामून का सेनापति अपने तम्बू से निकला और अपनी सेना का निरीक्षण करने लगा। अचानक उसने देखा कि एक ऊँट सवार तेजी से उसके कैम्प की ओर बढ़ रहा है। जब वह उसके पास आया तो उसने उसका नाम पूछा। ऊँट सवार ने कहा कि उसका नाम अली है।

ताहिर ने पूछा, "तुम यहाँ क्यों आये हो"?

अली ने उत्तर दिया, "जासूसी करने"।

ताहिर ने पूछा, "तुम्हें किसने भेजा है"?

"आमीन के सेनापति ने।"

ताहिर ने पूछा, "तुम्हें क्या चाहिए"?

अली ने कहा "मैं यहाँ पर पूरी छानबीन करना चाहता हूँ और तब अमीन के कैंप में लौट कर यहाँ की स्थिति के विषय में पूरी सूचना देना चाहता हूँ।"

ताहिर उसे कैम्प के मुख्यालय ले गया, उसे एक गाइड दिया जिसे उसने आदेश दिया "अली कहीं भी जा सकता है और किसी से भी कोई भी प्रश्न पूछ सकता है। कोई भी इस कार्य में रोक—टोक नहीं करेगा।"

जब अली अपनी छान—बीन करके लौटा तो ताहिर ने उससे पूछा कि उसने क्या—क्या देखा।

अली ने जवाब दिया, 'मैंने पूरी तरह से जाँच पड़ताल की, आपके सैनिकों के विषय में जानकारी हासिल की, आपके सेनापति की ताकत की थाह ली, आपके सैन्य खर्चे के विषय में मालूम किया, आपके सैन्य हथियारों की थाह ली, आपके सैनिकों की मानसिक प्रवृत्ति के विषय में जाना और अब मैं खुशी—खुशी अपने कैम्प में वापस चला जाऊँगा।"

ताहिर, अली की सत्यवादिता और ईमानदारी को देखकर स्तब्ध रह गया। उसने उसकी खूब आवभगत की और उसके प्रति आदर का भाव दिखाया। उस दिन रात के भोजन के बाद वे सोने की तैयारी करने लगे। ताहिर ने देखा कि अली बार—बार कम्बल के अन्दर अपना सिर उठा रहा है और सो नहीं पा रहा था। ताहिर ने पूछा कि क्या उसको कोई परेशानी हो रही है।

अली ने कहा कि वह उसके सो जाने की प्रतीक्षा कर रहा है जिससे वह भाग सके।

ताहिर ने कहा, "ठीक है, मैं सो जाता हूँ और तुम ईश्वर की सुरक्षा में चले जाना।" उसने अपना कम्बल सिर के ऊपर खींचा, आँखें बन्द की और सो गया। और अली तब निकल कर भाग गया।

संयोगवश युद्ध में मामून की विजय हुई और अमीन हार गया।

जीत के बाद ताहिर ने अली के लिए पूछा लेकिन अली कहीं छिप गया था। अंततः वह पकड़ा गया और उसको वित्त मंत्री बनाया गया। ताहिर ने कहा यदि तुम सत्यवादी नहीं होते तो मैं तुम्हें पहली ही बार में मार देता। तुम अपने विचारों में ईमानदार और दृढ़ थे इसलिए तुम वित्त मंत्री बनने के अधिकारी हो।

विश्व न्याय मन्दिर के दो सदस्यों का भारत आगमन

पृष्ठ 1 का शेष

सशक्त समुदायों की विशेषताओं में से एक है सामाजिक क्रिया में भाग लेने की उनकी इच्छा। अधिकांश लोग एक छोटी अवधि के लिए परियोजनाएं शुरू करते हैं जो विशेष चुनौती या विशेष आवश्यकता को ही संबोधित करती है। अन्य और भी पहल करते हैं जैसे ट्यूटोरियल स्कूल या पुस्तकालयों के साथ—साथ शैक्षिक केन्द्र। ये सभी अद्भूत प्रयास हैं और यह देखना आश्चर्यप्रद है और यह स्पष्ट है कि हमारे समुदायों की वास्तविकता को पढ़ने और उन्हें संबोधित करने की क्षमता बहुत अधिक बढ़ गई है।

चेन्नई में आयोजित की गई सभा जिसमें विश्व न्याय मन्दिर के सदस्य श्री प्रवीण मलिक ने भाग लिया। भारत के विभिन्न भागों से लगभग 120 मित्र एकत्रित हुए। इस सभा का केन्द्र 30 दिसंबर 2021 के संदेश के ''शैक्षिक प्रयास और प्रशिक्षण संस्थान'' शीर्षक का गहन अध्ययन करना था। एक प्रमुख केन्द्र उन मित्रों के लिए था जो इस बात पर गहराई से विचार करने के लिए एकत्र हुए थे कि 30 दिसम्बर 2021 के संदेश में उल्लिखित 'विस्तृत दृष्टिकोण' का प्रशिक्षण संस्थानों के लिए क्या अर्थ है।

प्रशिक्षण संस्थानों के गुणात्मक और मात्रात्मक दोनों पहलुओं को मजबूत करने पर विशेष जोर देने के साथ भारत में प्रशिक्षण संस्थानों के कामकाज को कैसे बढ़ाया जाए, इस पर विचार—विमर्श किया गया, जो हमारे प्रयासों के विकास का साधन बना हुआ है।

चेन्नई सभा का एक विशेष आकर्षण श्री मलिक का वक्तव्य था, जो परम पावन बाब के समय से लेकर आज तक भारत की आध्यात्मिक यात्रा पर था।

● निधन

डॉ. सलील बरतार



हमें यह बताते हुए अत्यंत दुःख हो रहा है कि मध्य प्रदेश में ग्वालियर के डॉ. सलील बरतार का 5 जुलाई, 2022 को निधन हो गया। डॉ. बरतार ने प्रभुधर्म के लिए कई वर्षों तक अनेक रूप में अपनी सेवाएँ प्रदान कीं। उनकी समर्पित सेवाओं को सदैव स्मरण किया जाएगा। इस संकट की घड़ी में उनके परिवार के प्रति अपनी सहानुभूति व्यक्त करते हुए आभा लोक में उनकी आत्मा की प्रगति के लिए प्रार्थनारत हैं।

श्री के. प्रभु



हमें यह बताते हुए अत्यंत दुःख हो रहा है कि हैदराबाद के श्री के. प्रभु का 17 जुलाई, 2022 को निधन हो गया। वे 56 वर्ष के थे। पिछले कुछ दिनों से वे गंभीर स्वास्थ्य समस्याओं से जूझ रहे थे। श्री प्रभु ने प्रभुधर्म के लिए कई दशकों तक अनेक रूप में अपनी सेवाएँ प्रदान कीं। उनकी समर्पित सेवाओं को हमेशा याद रखा जाएगा। इस संकट की घड़ी में उनके परिवार के प्रति अपनी सहानुभूति व्यक्त करते हुए आभा लोक में उनकी आत्मा की प्रगति के लिए प्रार्थनारत हैं।

कुल पृष्ठ संख्या—4

बहाई समाचारपत्र के स्वामित्व एवं अन्य विषयों से संबंधित फार्म – 4, नियम 8

समाचार का नाम : बहाई समाचारपत्र
रजि नं. : DELHIN / 1966 / 4204 यू नं. (C)-52/2021-22-23
डी.एल. DL (ND) 11/6036/2021-22-23
प्रकाशक का नाम : सुशील कुमार (भारतीय)
(बहाई भवन, 6 श्रीमंत माधव राव सिंधिया मार्ग, नई दिल्ली—1)
प्रकाशन स्थान : बहाई भवन, 6 श्रीमंत माधव राव सिंधिया मार्ग, नई दिल्ली—1

मुद्रक का नाम : सुशील कुमार (भारतीय)
बहाई भवन, 6 श्रीमंत माधव राव सिंधिया मार्ग, नई दिल्ली—1
मुद्रण स्थान : श्री मंगलम प्रिंटर्स, एफ—25, ओखला औद्योगिक क्षेत्र, फेज़—1, नई दिल्ली—110020
उन व्यक्तियों के नाम जो समाचारपत्र स्वामी हों : राष्ट्रीय आध्यात्मिक सभा को इसका स्वामित्व प्राप्त है, जो सोसायटीज़ एक्ट के अंतर्गत पंजीकृत है।

Licenced to post without Pre-Payment Posted at DPSO Delhi on 10/11.08.2022
Sender's Address:
6, Shrimant Madhavrao Scindia Marg.
New Delhi - 110 001 - INDIA

स्वामी, भारत के बहाईयों की राष्ट्रीय आध्यात्मिक सभा, जो सोसायटीज एक्ट के अंतर्गत पंजीकृत है, के लिए प्रकाशक, मुद्रक : सुशील कुमार के द्वारा श्री मंगलम प्रिंटर्स, एफ—25, ओखला औद्योगिक क्षेत्र, फेज़—1, नई दिल्ली—110 020 से मुद्रित एवं बहाई भवन, 6 श्रीमंत माधव राव सिंधिया मार्ग, नई दिल्ली—110 001 से प्रकाशित (सम्पादक : सुशील कुमार)